उपन्यास की शैली में शिव-तत्व

काशी मरणान्मुक्ति

लेखक : मनोज ठक्कर
रश्मि छाजेड़
प्रकाशक :शिव ओम साईं प्रकाशन, इंदौर। **मूल्य** : 360 रु.

भारतीय परंपराओं में शास्त्र आधारित मान्यताएं हजारों वर्षों से चली आ रही कि काशी के पांचकोस की परिधि में मृत्यु पाना, जीव का सौभाग्य है।

'काशी मरणान्मुक्ति' के रचयिता मनोज ठक्कर तथा रश्मि छाजेड़ हैं, जिन्होंने इस उपन्यास में विभिन्न शास्त्रों का निचोड़ पाठकों के समक्ष विविध सुरुचिकर व्यंजनों के रूप में परोसा है। पढ़ने वाला उपन्यासिक पद्धति में प्रस्तुत सामग्री का सांगोपांग अध्ययन करने के बाद सृष्टि के उद्भव, स्थिति और संहारकर्ता स्वयंभू भगवान शिव के अनेक रूपों का दर्शन करते हुए उपन्यास के कथानकों कश्य और अकश्य के बीच वैतरिणी गंगा में डूबता-उतराता है और उस परम सत्य को जान पाता जिसमें मान्यता है कि सृष्टि के कण-कण का निर्माण शिव ही करते हैं और सृष्टि के अंत में समूची सृष्टि उन्हीं शिव रूप में समा जाती है।

'काशी मरणान्मुक्ति' 69 अध्यायों और 502 पृष्ठों में वर्णित है। उपन्यास का नायक महा नामक एक बालक है, जो चांडाल के रूप में पला है। जिसकी मां उसे जन्म लेते ही मणिकर्णिका घाट के श्मशान की जलती चिताओं के समीप छोड़ जाती है। महा कोई दिव्यात्मा था क्योंकि आगे चलकर हरिद्वार, यमनोत्री, गंगोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ की यात्रा करता हुआ द्वादस ज्योर्तिलिंगों के दर्शनों के माध्यम से शिव के विभिन्न रूप से परिचित होता हुआ अंत में काशी विश्वनाथ में विलीन होकर परम विश्रांति पाता है। पूरी यात्रा, पूरा चलचित्र एक कथा में पिरोने वाले मनोज ठक्कर और रश्मि छाजेड़ ने काशी और शिव के विभिन्न स्वरूपों को बहुत गंभीरता से देखा है और इतना गंभीर विषय पाठकों के लिए बड़े भावप्रण ढंग से परोसा है। लेखकद्वय अपनी इस कृति के साथ ही हिंदी साहित्य के आकाश में सदा के लिए अंकित हो गए हैं। लेखकों ने स्पष्ट किया कि 'काशी मरणान्मुक्ति' ग्रन्थ की रीढ़ की हड्डी शिव पुराण है। अन्य पुराण इसके अंग-प्रत्यंग हैं।

कथा की रचना और विस्तार के बारे में यही कहा जा सकता है कि कोई भी रचना कितनी भी गंभीर क्यों न हो, अगर विषयवस्तु को कठिन शब्दों में पिरोया जाता है तो वह सीमित पाठकों की क्षुधा ही शांत कर पाती है।अगर लेखकद्वय ने सरल भाषा में इसे लिखा होता तो शायद यह हर उस पाठक के लिए बोधगम्य हो जाती, जो शिव के रूप में अमृत को अपनी अंजुरि में भरकर पी पाता।